वेदों की खुशबू
ओ३म्
वेद सब के लिए
(धर्म मर्यादा फैलाकर लाभ दें संसार को)

VEDIC THOUGHTS

A Perfect Blend of Vedic Values And Modern Thinking

Monthly Magazine	Issue 31	Year 3	Volume 7	April 2015 Chandigarh	Page 24	मासिक पत्रिका Subscription Cost Annual - Rs. 100-see page 4

विचार

विचारों पर शासन करें

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो

''कुछ कर गुज़रने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए''

अन्तर केवल मन में घूम रहे विचारों का है।

मानव मन एक कम्प्यूटर की तरह काम करता है। इसमें जो डालोगे वही बाहर निकलेगा। अच्छे विचार मस्तिष्क को स्वास्थ्यप्रद हार्मोन उत्सर्जित करने के लिए प्रेरित करते हैं तथा बुरे विचार मस्तिष्क को व्याध्जिनक हार्मोन उत्सर्जित करने के लिए प्रेरित करते हैं।

विचार हम पर शासन करते हैं लेकिन हम भी विचारों पर शासन कर सकते हैं। विचारों पर शासन करने का तरीक़ा है विचारों का चुनाव करना। विचार समाप्त नहीं किये जा सकते लेकिन अच्छे विचारों का चुनाव संभव है। बुरे विचारों से छुटकारा संभव है लेकिन तभी जब अच्छे विचार, स्वस्थ सकारात्मक विचार भी हों।

इसलिये स्वस्थ–सकारात्मक विचारों से मन में आने दे और मन को इन से भर कर रखें। जब बुरे विचारों के लिए मन में स्थान ही नहीं बचेगा तो वे प्रभावित ही नहीं कर सकेंगे। स्वस्थ सकारात्मक विचारों को प्रभावित करने दीजिए और उनका प्रभाव देखिए। आज ही किसी एक सकारात्मक विचार को हावी होने दीजिए उस विचार का कल्पना चित्र बनाइये और उसमें खो जाइये। बार–बार लगातार इसे दोहराते रहिये, लाभ होगा। एक तरीका आपके हाथ आ जाएगा।

Contact: Bhartendu Sood, Editor, Publisher & Printer # 231, Sec. 45-A, Chandigarh 160047
Tel. 0172-2662870 (M) 9217970381,
E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

अमेरिका के कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय के भाषाविद् जॉन ग्रिंडर तथा कम्प्यूटर विशेषज्ञ रिचर्ड बैंडलर द्वारा विकसित न्यूरो लिंग्विस्टिक प्रोग्रामिंग (NLP) कहती है कि विश्वास के ऊपर ही निर्भर है सुख–दुख, सफलता–असपफलता, शांति–क्रोध तथा क्रिया एवं कर्म का स्तर। विश्वास उपजता है मन में। मन की शक्ति द्वारा ही हम शिक्षा, खेल–कूद, संगीत–नृत्य, उद्योग–व्यवसाय, व्यक्तित्व विकास तथा चिकित्सा एवं उपचार के क्षेत्रा में असाधरण सफलता प्राप्त कर सकते हैं। इसी के द्वारा कैंसर तक के रोगी को ठीक किया जा सकता है अथवा शरीर के टूटे हुए अंग का उपचार किया जा सकता है।

सकारात्मक सोच, सकारात्मक इच्छा, सकारात्मक विश्वास तथा सकारात्मक आकांक्षा ये सभी तत्त्व हमारे अच्छे स्वास्थ्य के निर्माण के महत्वपूर्ण घटक हैं। जो व्यक्ति जीवन में इन तत्त्वों पर आधरित सकारात्मक मानसिक दृष्टिकोण (Positive Mental Attitude) अपनाता है वह शायद ही बीमार होता हो। स्वस्थ होने का अनुभव मात्र ही स्वास्थ्य उत्पन्न करता है तथा सम्पन्नता का अनुभव सम्पन्नता। मेरे प्रिय मित्र आप क्या अनुभव कर रहे हैं? The feeling of health produces health. The feeling of wealth produces wealth.

अभाव और सम्पन्नता दोनों अनुभव हैं। अभाव का अनुभव खराब तथा सम्पन्ता का अनुभव अच्छा ही हो यह जरूरी नहीं। हर अनुभव में आनंद प्राप्त करने का प्रयास होना चाहिये। अनुभव अच्छा या बुरा नहीं होता ये तो हमारी सोच का परिणाम मात्रा है। सोच बदलने से परिणाम बदल जाता है जिसे आप हार या असफलता समझते हैं वो जीत या सफलता में बदल जाती है। कठिन परिस्थितियों में जीवन यापन, यात्रा अथवा खानपान का अनुभव आप चाहें ही कष्टप्रद हो पर आपकी सांच इसे रोमांचक तथा प्रेरणास्पद भी बना सकती है।

विशेषज्ञ कहते हैं कि जो सुखी हैं, संतुष्ट हैं अथवा ऐसा अभिनय करते हैं उनकी उम्र भी अधिक होती है।

जीवन एक नाटक ही तो है। वास्तविक जीवन में न जाने कितना अभिनय करना पड़ता है। कभी हम अमीर बनने का अभिनय करते हैं तो कभी ग़रीब बनने का कभी स्वस्थ दिखने का तो कभी रुग्ण होने का। छुट्टी लेने के लिए लोग प्रायः अपनी या परिवार के अन्य सदस्यों की बीमारी का बहाना बनाते हैं और एक ऐसी कहानी गढ़ते हैं कि छुट्टी देने वाला विवश हो जाता है लेकिन जो कहानी गढ़ी गई, जो कल्पना की गई, जो भाव चेहरे पर उत्पन्न किये गए, वे भाव सबसे पहले मन में उत्पन्न हुए। जो कल्पना की गई वो भी मन में उत्पन्न हुई। और जो विचार मन में उठे वो वास्वविक जीवन में घटित भी अवश्य होंगे।

अतः तभी कहा गया है कि कभी भी झूठ मत बोलो। जीवन में अभिनय करो लेकिन सकारात्मक अभिनय। बाहर के लोगों को प्रभावित करने के लिए नहीं अपितु मन को प्रभावित करने के लिए। अपने मन को समझाइये कि मैं सुखी और संतुष्ट हूँ। अपने मन को प्रभावित कीजिए कि मैं पूर्णरूपेण स्वस्थ हूँ, मेरे हृदय में सबके लिए प्रेम है। यह अभिनय श्रेष्ठ अभिनय है। यदि कोई रोग आ घेरता है तो भी घबराइये मत रोग का आना स्वाभाविक है। जाना भी निश्चित है। उपचार करते रहिये लेकिन साथ ही मन को दुर्बल नहीं होने दें। कहें कि मेरे अंदर रोग से लड़ने की पूर्ण क्षमता है। मैं रोग को भगा कर ही दम लूँगा। तभी तो हिंदी के प्रसिद्ध गीतकार रमानाथ अवस्थी कहते हैं :

कुछ कर गुज़रने के लिए मौसम नहीं मन चाहिए

कैसे आकाश में सूराख़ नहीं हो सकता,
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो।

दुष्यंत कुमार

सीताराम गुप्ता की पुस्तक ' मन द्वारा उपचार से'
फोन नं. 09555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

Greed can be very frustating, greed is a bottomless pit which exhausts the person in an endless effort to satisfy the need without ever reaching satisfaction

अगर आपको कुछ कहना है या पत्रिका subscribe करनी है
कृप्या निम्न address पर सम्पर्क करें
भारतेन्दु सूद, 231 सैक्टर– 45-ए चण्डीगड़.160047
0172.2662870, 9217970381, E mail : bhartsood@yahoo.co.in

तत्व ज्ञान क्या है?

एक बार एक राजा, पास के ही किसी पर्वत पर सुवह सुवह भ्रमण के लिये निकल पड़ा। अभी कुछ दूर ही पहुंचा था कि बूंदा बांदी होने लगी, और राजा को महल की और वापिस मुड़ना पड़ा। राजा क्या देखते हैं कि रास्ते के किनारे एक साधु बैठा हुआ है। उसे न तो सम्भावित बारिश की कोई चिन्ता थी, न तो उस के शरीर पर कोई वस्त्र ही था, न ही उसके पास कोई भिक्षा पात्र ही था, न कोई खाट न ही कोई झोंपड़ी ।राजा उस साधु की हालत देखकर विचार करने लगा कि मैं कैसा अयोग्य राजा हूं कि जिस के राज्य में साधु इस हालत में रहने पर मजबूर है।

अगले दिन राजा ने सेवक के द्वारा उस साधु को 25 रूपये भेजे। साधु ने जवाब दिया कि किसी भिखारी को दे दो। सेवक ने जब साधु का जबाव राजा को बताया तो राजा ने सोंचा कि शायद 25 रूपये साधु को कम लगे। उस ने अगले दिन सौ रूपये देकर सेवक को भेजा पर वही **उत्तर मिला कि किसी गरीब** भिखारी को दे दो। अब की बार राजा बहुत बड़ी राशी लेकर स्वयं साधु के पास गये। साधु ने राजा को भी वही **उत्तर दिया कि किसी गरीब** भिखारी को दे दो। राजा ने सुना तो बोले–––स्वामी जी आप से बढ़कर दीन मुझे तो नजर नहीं आया, न तो रहने को झोंपड़ी है, न तन ढकने के लिये कपड़े और न खाने के लिये भोजन। साधु ने झट से **उत्तर दिया––मुझ को दीन तो आप समझ रहें हैं, मैं तो राजा हूं। राजा मन में ही मुस्करा दिये और साधु को समझाने के लिये बोले। राजा तो वह होता है जिस के पास सेना होती है, आपके पास सेना कहां है? साधु ने सुना तो बोले–––उनको भय होता है इस लिये सेना रखते हैं। जब हमें किसी भी चीज का भय ही नही ंतो सेना किस लिये रखें?**

राजा ने कहा –––राजाओं के पास तो धन का खजाना होता है। आप के पास खजाना कहां है। साधु ने सुना तो बोले–––खजाना तो वह रखते हैं जिन्हे भविष्य की चिन्ता सताती है। मुझे भविष्य की चिन्ता ही नही ंतो खजाना किस लिये रखूं? मेरे पास तो ऐसा रसायन है कि जब चाहूं किसी भी पत्थर को साने का बना दूं। ऐसे में खजाना रख कर क्या करूंगा। सामने यह पहाड़ देख रहे हो न, इसे जब चाहूं सोने का बना दें। यह उत्तर सुन कर राजा चल दिये। रास्ते में सोचने लगे कि इस साधु के पास अवश्य यह अनुठा रसायन है वरना मेरी उस आपार राशी को न ठुकराता।

महल में जा कर सोचा, क्यों न इस साधु को प्रार्थना कर एक – दो लाख मोहरें बनवाली जायें। मुश्किल के समय काम आयेंगी और पास के राजाओं पर प्रभाव भी बड़ेगा। ं राजा ने विचार किया कि रात के समय ही जाकर उस से मिल लेता हूं ताकी किसी को पता भी न लगे। देर रात्री राजा एक घोड़ागाड़ी मे एक लाख के करीब तांवे की मुद्रायें लेकर उस साधु की और चल दिये। साधु ने इतनी रात्री में किसी को अपने पास आते देखा तो पूछा––––कौन है? राजा ने कहा –––मैं यहां का राजा आपकी सेवा में आया हूं। पर इस समय आने की क्या आवश्यकता पड़ गई?––साधु ने पूछा । राजा ने सब भूमिका बता कर साधु से

निवेदन किया कि वह एक लाख के करीब तांवे की मुद्राओं को सोने की मुद्राओं में बदल दे।

साधु हंस दिया और बोला———अब बता दीन कोन है, मैं कि तू। मांगने तू आया है कि मैं,? यह सुनकर राजा ने कहा——————निस्संदेह दीन तो मैं हूं। आप दया कर, तांवे की मुद्राओं को सोने की मुद्राओं में बदल दे। साधु ने कहा बना देंगे पर तेरे को कुछ दिन रोज मेरे पास आना होगा।

राजा ने नित्य साधु के पास आ कर उस का उपदेश सुनना शुरू कर दिया। साधु उस को तत्व ज्ञान के बारे में बताता। अर्थात संसार में नित्य क्या है और अनित्य क्या है। असली ज्ञानी और विवेकी वह है जो नित्य को नित्य समझता है और अनित्य को अनित्य। और मूर्ख अज्ञानी वह है जो अनित्य को नित्य समझ कर जीता है। जैसे यह शरीर अनित्य है, सदैव रहने वाला नहीं हैं। पर अज्ञानी व्यक्ति इस शरीर को नित्य समझकर इस को संवारने में इस के लिये सुख आराम की सामग्री बटोरने में लगा रहता है। वह सुख को धन में ढूंढता है। इस के विपरीत ज्ञानी मनुष्य शरीर को नहीं अपितु आत्मा को नित्य जानकर उस को ज्ञान, विवेक द्वारा कल्याण मार्ग का पथिक बन कर उन्नत करता है और मोक्ष को प्राप्त होता है। वह जानता है कि धन की तृष्णा कितनी दुंखदायक है। यही नहीं तृष्णावश मनुष्य अनित्य को नित्य बनाने हेतु सहस्रों प्रकार के पाप करता है। कुछ महीने में ही राजा साधु के उपदेश सुनकर तत्वज्ञान का विद्वान हो गया और उसकी वासनायें नष्ट हो गई।

साधु ने जब देखा कि राजा अब दीन नहीं रहा और उसकी आत्मदशा सुधर गई है तो उसने राजा से कहा——— जाओ अपनी तांवे की मुद्राओं को ले आओ हम उन्हें सोने की मुद्राओं में बदल देंगें।

राजा ने हंसकर उत्तर दिया————महात्मा ! आपके उपदेश ने ताम्र को सुवर्णबना दिया है। अब सोने की मुद्राओं की कोई आवश्यकता नहीं

पत्रिका के लिये शुल्क

सालाना शुल्क 100 रूपये है, शुल्क कैसे दें

1. आप 9217970381 या 0172–2662870 पर subscribe करने की सूचना दे दें। PIN CODE अवश्य दे
2. **आप चैक या कैश निम्न बैंक मे जमा करवा सकते हैं :–**
   Vedic thoughts, Central bank of India A/C No. 3112975979 **IFC Code - CBIN0280414**
   Bhartendu soood, IDBI Bank - 0272104000055550 **IFC Code - IBKL0000272**
   Bhartendu Sood, Punjab & Sindh Bank - 02421000021195, **IFC Code - PSIB0000242**
3. आप मनीआर्डर या at par का Cheque द्वारा निम्न पते पर भेज सकते है। H. No. 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047.
4. दो साल से अधिक का शुल्क या किसी भी तरह का दान व अनुदान न भेजें। शुल्क तभी दें अगर पत्रिका अच्छी लाभप्रद व रूचिकर लगे।

यदि आप बैंक में जमा नहीं करवा सकते तो कृपया at par का चैक भेज दे।

पत्रिका में दिये गये विचारो के लिए लेखक स्वयं जिम्मेवार है। लेखको के टेलीफोन न. दिए गए है न्यायिक मामलो के लिए चण्डीगढ़ के न्यायलय मानय है।

Publisher & Printer Bhartendu Sood **Printed at** Umang Printer, Plot No. 26/3, Ind. Area, Phase-II, Chd. 9815628590
Owner Bhartendu Sood **Place of Publication** # 231, Sector 45-A, Chandigarh 160047
Phone : 0172-2662870 (M) 9217970381 Name of Editor : Bhartendu Sood

सम्पादकिय

ईसाई मिशनरियों को समझना होगा कि भारत की भूमी अब उतनी उपजाउ नहीं जैसे कि पहले थी

मेरे यह विचार हिसार, हरियाणा में चर्च की घटना को लेकर हैं। पिछले 100 सालों में ईसाई मिशनरियो ने हिन्दु उच्च जाति के लोगों का निम्न जाति के लोगों की तरफ घृणा के रूख का बहुत फायदा उठाया और करोड़ों निम्न जाति के लोगों को जीसस के नाम से झूठे चमत्कार बताकर और दूसरे प्रलोभन देकर ईसाई बनाया। हालांकि निम्न जाति के लोंगों की इस में कोई गलती नहीं। ऐसे धर्म को क्या करना जिस में मानव होते हुये भी पशुओं से निम्न समझा जायें।

परन्तु अब ईसाई मिशनरियों को यह समझना होगा कि जो हिन्दु धर्म में उच्च जातियां मानी जाती रहीं हैं उनका रवैया अब निम्न जाति के लोगों की तरफ काफी कुछ बदल रहा है, अब वे उनको उस घृणा से नहीं देखते या व्यवहार करते जैसा कि आज से 50 वर्ष पहले तक था। आर्यसमाज, राष्टीय स्वयं सेवक संघ जैसी और अन्य संस्थाओं ने इस दिशा में बहुत काम किया है जिस के प्रणाम स्वरूप अब हिन्दु धर्म में उच्च जाति के लोग अब यह समझने लगें हैं कि निम्न धर्म के लोगों को अपने से अलग करना हिन्दु जाति के लिये नुकसान दायक है। इसलिये इस बात को ईसाई मिशनरियों को समझना होगा कि भारत की भूमी अव निम्न जाति के लोगों को ईसाई बनाने के लिये अब उतनी उपजाउ नहीं जैसे कि पहले थी। हालांकि बहुत से हिन्दुओं को अभी भी यह समझना है कि सब मानव एक ही ईश्वर की सन्तान है और बराबर हैं और मुनष्य के लिए मानवता ही असली और सबसे बड़ा धर्म है।

परन्तु मुश्किल यह है कि अभी भी बहुत से ईसाई और ईसाई संस्थान, मिशनरियों से सहायता पाकर धर्म परिवर्तन काम में लगे हुये हैं । जिस गांव में कोई ईसाई परिवार नहीं रहता वहां पर चर्च बनाने का उदेश्य केवल निम्न जाति के लोगों का धर्म परिवर्तन ही हो सकता हे। और यह काम एक पादरी ही नहीं कर सकता जब तक कि एक बहुत बड़ा संघटन उस के पीछे न हो। उस संघटन की जड़े इतनी गहरी हैं कि आज भारत का एक बड़ा अंग्रजी का अखवार उनके पैसे से चलता है।

18 वी सदी तक चर्च युरोप में बहुत ताकतवर था। यहों तक कि वहां कि हकूमत भी चर्च के निर्देश से चलती थी पर उस के बाद चर्च का प्रभाव कम होने लगा, कारण वहां का पढ़ा लिख तवका समझने लगा कि कैंसर दवाईयों के सेवन से तो ठीक हो सकता है जीसस के चमत्कार से नहीं। हाल यह हो

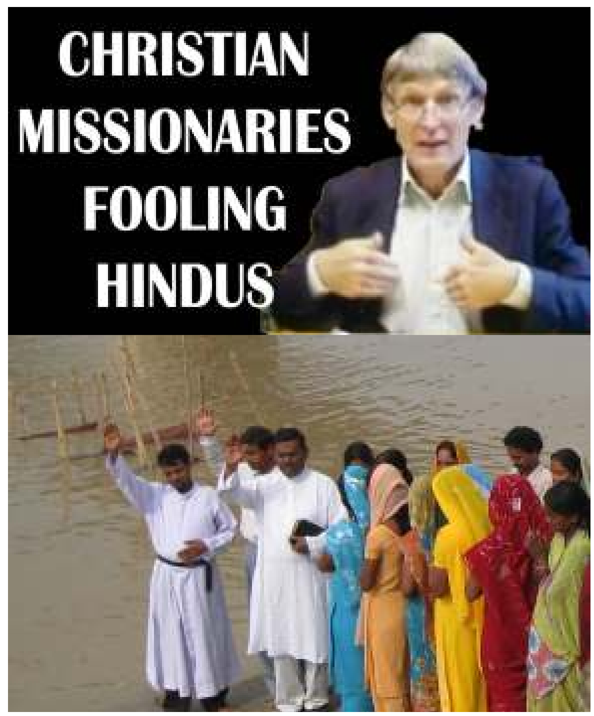

गया कि चर्चों में उपस्थिती न के बराबर हो गई। लोगों ने पैसा देना बन्द कर दिया। हकूमत ने अपने को चर्च से अलग कर लिया। ऐसे में ईसाई मिशनरियो ने गरीब देशों(third world countries) की तरफ जैसे की भारत है रूख कर दिया और करोड़ों लोंगों को प्रलोभन देकर और गलत प्रचार का सहारा लेकर धर्म परिवर्तन कर ईसाई बनाया। पर अब शिक्षा के प्रसार के बाद और आर्थिक हालत में सुधार होने के कारण इन देशों में भी कुछ विरोध होने लगा है। आज हम जो आतंकी इसलाम देख रहे हैं यह बहुत हद तक ईसाईयों द्वारा अपनाये गये गलत हथकण्डों का ही परिणाम है।

पर बात उस समय बिगड़ जाती है जब कांग्रेस या धर्म निरपेक्ष कहे जाने वाली दूसरे दल असलियत को जानते हुये भी ईसाईयों द्वारा अपनाये गये गलत हथकण्डों के समर्थन में आ जाते है। अगर हरियाणा में कांग्रेस और चौटाला के दल ने ईसाईयों की ऐसी हरकतों का समर्थन किया तो मुझे हैरानगी नहीं होगी अगर हरियाणा भी भारतीय जनता पार्टी का गढ़ बन कर उभरे। जहां तक मिडिया का प्रश्न है वह एक खास विचारधारा को लेकर जब चलता है तो असलियत से अन्धा हो जाता है, जैसा कि हाल के लोकसभा चुनाव में हुआ, मोदी के बड़ते हुये प्रभाव को भी न देख सके और उसका विरोध करते रहें

क्यों न हम ऐसे हालात बनाये ताकी गरीब बेसहाय और निम्न जाति के लोगों को धर्म परिवर्तन की आवश्यकता ही न पड़े। घर वापसी की फिर नोबत ही नहीं आयेगी। आपके ही शहर में बहुत से नेपाली हिन्दु के रूप में आते है और ईसाई बन कर जाते हैं, कारण उनको इस अनजाने शहर में कोई हिन्दु संस्था तो सहायता नहीं करती जब की ईसाई आगे आकर उन की सहायता करते है। हिन्दुओं में कछ परिवर्तन हुआ है पर वह काफी नहीं। उन्हें इस जाति प्रथा को तलांजली देनी होगी । अगर यह असंभव है तो निम्न जातियों को आदर देना होगा और साथ ले कर चलना होगा। समर्थ हिन्दू अगर कमजोर हिन्दुओं से प्रेम करना और उनकी सहायता करना सीख लें तो कोई भी हिन्दू ईसाई नहीं बनेगा। तब ईसाई मिशनरियां खुद ही विफल हो जायेंगी।

क्यों सहस्रों अछूत ईसाई धर्म ग्रहण करते जा रहे हैं?

'स्वामी विवेकानन्द के दिल की पीड़ा–काश हिन्दु समाज इसे समझ सकता––लगभग 100 साल पहले की गई टिपन्नी

इन चन्द लाइनो में जहां एक और हिन्दु धर्म की कुरीतीयों को लेकर स्वामी विवेकानन्द जी के दिल की पीड़ा झलकती है वहीं हिन्दू जाति को जागृत करने के लिये वह मूल मन्त्र प्रस्तुत कर रहे हैं।

स्वामी विवेकानन्द जी लिखते हैं कि '' आम भारतीयों का दुःख–पीड़ा देखकर कभी–कभी मैं सोचता हूं––फेंक दो सब यह पूजा–पाठ का आडम्बर। शशंख फूंकना, घंटी बजाना और दीप लेकर आरती उतारना बन्द करो। निज मुक्ति का, साधन का, शशास्त्र–ज्ञान का घमंड छोड़ दो। गांव–गांव घूमकर दरिद्र की सेवा में जीवन अर्पित कर दो।

धिक्कार है कि हमारे देश में दलित की, विपन्न की, संतप्त की चिन्ता कोई नहीं करता। जो **राष्ट्र** की रीढ़ हैं, जिनके परिश्रम से अन्न उत्पादन होता, जिनके एक दिन कामबन्द करते ही महानगर त्राहि–त्राहि कर उठते हैं–उनकी व्यथा समझने वाला कौन है हमारे देश में? कौन है उनका सुख दुःख बाटने को तैयार ?देखो, कैसे हिन्दुओं की सहानुभूति–शून्यता के कारण मद्रास प्रदेश मे सहस्रों अछूत ईसाई धर्म ग्रहण करते जा रहे हैं। मत समझो कि वे भूख के मारे ही धर्म–परिवर्तन करने को तैयार हुए हैं। इसलिए हुए हैं कि तुम उन्हें अपनी सम्वेदना नहीं दे सकते। **तुम उनसे निरन्तर कहते रहते हो–छुओ मत। यह मत छुओ, वह मतछुओ। इस देश में कहीं कोई दया–धर्म अब बचा है कि नहीं? या कि केवल 'मुझे छुओ मत ही' रह गया है।** लात मार कर निकाल बाहर करो इस **भ्रष्ट** आचरण को समाज से। कितना चाहता हूं कि अस्पृश्यता की दीवारें ढा कर सब ऊंच नीच को एक में मिलाकर पुकारूं–आओ सब दीन हीन सर्वहारा ! पददलित, विपन्न जन ! आओ, हम श्रीरामकृष्ण की छत्रछाया में एकत्र होवें। जब तक यह जन नहीं उठेंगे, तब तक भारत माता का उद्धार नहीं होगा।''

अगर मदर टरेसा ने हिन्दुओं को ईसाई बनाया तो उस के भी जिम्मेवार हम हिन्दु है, और कोई नहीं। ईसाई मिशनरियों की तरफ उंगली उठाने से पहले हम अन्दर झांके।

श्री मनमोहन कुमार आर्य द्वारा संकलित

ईसाई मिशनरियों के काम के बारे में श्री कृष्णचन्द्र गर्ग के विचार

ईसाई दो प्रकार के काम कर रहे हैं - (एक) वे जरूरतमन्दों की, नीचे गिरों की सहायता करके उन्हें ऊपर उठा रहे हैं। (दूसरे) जीसस के नाम से झूठे चमत्कार बताकर लोगों को ईसाईयत की ओर आकर्षित करने का प्रयास करते हैं। पहला काम तो बहुत बढ़िया है और मानवता का है। इस काम को हिन्दू नहीं कर रहे। हिन्दू तो गरीबों से नफरत करते हैं, उनसे दुर्व्यवहार करते हैं। उनकी सहायता के नाम पर कोरा आडम्बर रचते हैं। पर पत्थर की मूर्तियों पर अथाह धन लुटाते हैं। ईसाईयों का दूसरा काम गलत ही नहीं अपितु अपराध है। पर ऐसा अपराध तो हिन्दू पाधे, पण्डे, पुजारी और ज्योतिषी भी करते हैं।

जहां तक हिन्दुओं के जागने की बात है वे केवल ईसाईयों के सम्बन्ध में ही जाग रहे हैं क्योंकि ईसाई आसान लक्ष्य (Soft Target) हैं। आतंकि मुसलमानों के अथाह अत्याचारों के प्रति तो हिन्दू आँख भी खोलना नहीं चाहते।

ईसाईयों के गरीबों और असहायों के प्रति किए उपकार के लिए उनकी प्रशंसा होनी चाहिए और उनके पाखण्ड का खण्डन होना चाहिए। हिन्दुओं के पाखण्ड और अन्धविश्वास का भी पुरजोर खण्डन होना चाहिए। समर्थ हिन्दू अगर कमजोर हिन्दुओं से प्रेम करना और उनकी सहायता करना सीख लें तो कोई भी हिन्दू ईसाई नहीं बनेगा।

मुझे इस बांत में तो कोई औचित्य दिखाई नहीं देता कि ईसाईयों के व्यवहार के कारण इस्लाम अत्याचारी बना है। ईसाईयों के दस निर्देशों (Ten Commandments) में तो कुछ भी गलत नहीं है। मुसलमानों की कुरान में 6250 आयतें हैं। उनमें लगभग 40% आयतें ऐसी हैं जो सीधे तौर पर गैर मुस्लिमों पर क्रूरतम अत्याचार करने का आदेश देती हैं। मुसलमानों द्वारा गैर मुसलमानों पर जो अनन्त अत्याचार हुए हैं और हो रहे हैं वे सब कुरान के आदेश अनुसार ही तो हो रहे हैं।

और भी, मुनष्य के लिए मानवता ही असली और सबसे बड़ा धर्म है। मानवता हिन्दुओं की अपेक्षा ईसाईयों में कहीं अधिक है। जब तक हिन्दू पत्थरों की बजाए इंसानों की सेवा करना नहीं सीखेंगे तब तक ईसाईयों को गलत ठहराना उचित नहीं। क्या हिन्दुओं में ऐसे गुण हैं कि वे ईसाईयों को हिन्दू बनालें।

कृष्णचन्द्र गर्ग, 831 सैक्टर 10, पंचकूला, हरियाणा 0172-4010679

M/S AMMONIA SUPPLY COMPANY

(An ISO 9001-2008 Certified Company)

Joins " VEDIC THOUGHTS" in its noble Pursuit of spreading 'Moral Values

कृत लोकं पुरूषो भिजायते

अपने अन्तःकरण में जैसी दुनिया मैं बनाता हूं, वैसी ही मुझ को मिलती है। हमारे कर्मों का फल हमारे सामने आ जाता है। कोई दूसरा उसके लिये उतरदायी नहीं। कर्म के मार्ग पर ले जाने वाली है बुद्धि। इसलिये ईश्वर से यह प्राथ्रना करते रहें

धियो यो नः प्रचोदयात

प्रभु मुझे वह बुद्धि दें जो तेरी और चले

SUPPLIERS OF ANHYDROUS AMMONIA AND LIQUOR AMMONIA

D-4 Industrial Focal Point, Derabassi, District (Mohali) Punjab

Contact:- Rakesh Bhargav, Branch Manager 093161-34239, 01762-652465

Fax 01762-282894. Email- asco.db@ascoindia.com & ascodb@gmail.com

Only if P V Narasimha Rao had Vajpayee's clout

Bhartendu Sood

Yes, to me honouring Atal Bihari Vajpayee with Bharat Ratna is a political decision. Every person who makes to the top has some sterling qualities, so also Vajpayee had, but to award him before awarding the Ex Prime Minister **Mr P V Narasimha Rao** smacks of partisan approach of the present NDA regime. This is the same situation when **Sachin Tendulkar** was awarded Bharat Ratna before even considering more deserving like **hockey wizard Dhyan Chand**, that UPA did with eyes on the votes in the election year, on account of Tendulkar's huge popularity. It is quite evident that if UPA was not free from personal biases in the selection for this highest honour, NDA is also not.

As we know well, Mr. Narasimha Rao was an accidental prime minister who was all set to retire from politics when the assassination of former Prime Minister Rajiv Gandhi in 1991 placed him at the centre of Indian political scene. But, this accidental appointment changed the destiny of the nation as had never happened before, after the independence. His tenure as the PM came to define the dividing line between the old India and the new. His tenure will be remembered for country's departure from crony capitalism in the form of license Raj to a more liberalized economy on which our modern India stands. Today if our business landscape has new breed of self made, technology savvy and internationally acclaimed figures like Narayan Murthy, founder of Infosys and Azim Premji founder of Wipro; and many others and a country is known as an IT power house, credit goes to the reforms brought about by Mr. Narasimha Rao.

The man who was described indecisive by political pundits when he became the Prime Minister surprised his detractors by moving ahead decisively to build the new India. Even as he selected persons for his cabinet, he proceeded to lay down the groundwork for the mega reforms and nothing manifests it better than picking up internationally acknowledged economist Manmohan Singh as the Finance Minister, an apolitical selection, not many could think of at that time. In a television address on June 22, only a day after he took the oath of office, he placed before the nation the new policy framework.

"We are determined to address the problems of the economy in a decisive manner. This government is committed to removing the cobwebs that come in the way of rapid industrialization. We will work towards making India internationally competitive; taking full advantage of...opportunities offered by the evolving global economy...We also welcome foreign direct investment so as to accelerate the tempo of development, upgrade our technologies and to promote our exports. Obstacles that come in the way of allocating foreign investment on a sizable scale will be removed. A time-bound programme will be worked out to streamline our industrial policies and programmes to achieve the goal of a vibrant economy that rewards creativity, enterprise and innovativeness." said Rao.

Affable and endowed with huge charisma, Vajpayee like other distinguished personalities had his qualities of head and heart but he did nothing special to deserve this award. He did not give a new direction to the country in any area, what Narasimha Rao did by shaking our economy from the bottom or Sardar Patel did by joining all states in to a nation, or Jawahar lal did by making secularism and democracy as the cornerstones of our constitution which has given stability to our country or Lal Bahadur Shastri did in his short span by carving special place for Jawan and Kissan in our national ethos.

It is a sad fact that even a person like Narender Modi who swears by development was driven by personal biases and loyalty rather than the cold logic. If the Congress party has been unfair to Rao, Modi has been no different when it comes to honouring distinguished persons. In all fairness the next Bharat Ratna awardees should be **Mr P V Narasimha Rao and hockey wizard Dhyan Chand.**

कुछ अच्छी घटनाओं की डायरी (छोटी कापी)

नीला सूद

हर एक व्यक्ति का जीवन अच्छी और बुरी घटनाओं का मिश्रण है। पर हमारी बुद्धिमता इसी में है कि हम बुरी घटनाओं के बारे में ही सोचते न रहें अपितु उन घटनाओं या मधुर क्षणों को याद करें जिन्होने हमारे जीवन को सुखद और खुशहाल बनाया था यही नहीं इन सुखद घटनाओं को अपने मन में अधिक से अधिक स्थान दे कर दुख देने वाली घटनाओं की छाप को मिटाने की कोशिश करें। ऐसा करने से हम कुछ गलत निर्णय लेने से बच जाते हैं, जैसा कि यह छोटी सी घटना बताती है।

प्रिया की मां उन कुछ बुद्धिमान स्त्रीयों में से एक थी जो कि अपने बच्चों को मूल्यवान उपहार न देकर समय समय पर जीवन को अच्छा बनाने वाली कुछ अनमोल बातें बताती रहती। प्रिया के विवाह के समय, उसके माता जी ने एक डायरी के रूप में उसे अनुठा उपहार दिया और साथ ही उसे प्रयोग करने के निम्न निर्देश दिये––'' प्रिया यह मेरा विदाई के समय का उपहार है। जब भी तुम्हारे जीवन में कोई अच्छी यादगार घटना घटे तो तुम उसे इस डायरी में तिथी के साथ संक्षिप्त में लिख देना और साथ ही उस सुखद घटना की फोटो भी लगा देना। हां इस में किसी अनहोनी या खराब घटना के बारे में लिखने की आवश्यकता नहीं। इस डायरी को ऐसे ही सम्भाल कर रखना जैसे अपने गहनों को रखोगी।

प्रिया को जैसे उसकी मां ने कहा था वैसे ही वह अच्छी यादगार घटनटाओं कों तिथी के साथ डायरी में संक्षिपत में लिख देती थी––उदाहरण के लिये जब उन्होने उसके पति विनोद का जन्म दिन मनाया, या जब प्रिया का वेतन बड़ा, या जब सालाना छुटिटयां मनाने केरल गये, या जब उनके बच्चे का जन्म हुआ और उस के जन्म दिनों पर होने वाले उत्सव, या जब विनोद की तरक्की हुई, सब ऐसी और सुखद घटनायें ।

परन्तु कुछ सालों के बाद उन दोनों में मनमुटाव हो गया। लड़ाई झगड़े भी शुरू हो गये। बात यहां तक पहुंच गई कि दोनों एक दूसरे से अलग होने की बात करने लगे। ऐसे में जब कि दोनों ही अपने अंहकार को छोड़ना नहीं चाहते थे गाड़ी पटरी पर बापिस आती नजर नहीं आ रही थी।

एक दिन प्रिया ने अपनी मां को सब कुछ बता कर तलाक लेने का निर्णय बता दिया।

प्रिया की मां ने धैर्य से सब सुना और फिर बड़े सहज ढ़ग से बोली––'' बेटी यह तुम्हारा अपना जीवन है। जो तुम्हें परिस्थितियों के अनुसार ठीक लगता है करो। पर मेरी एक राय है–– याद करो मैने शादी के समय तुमें एक डायरी दी थी। मेरा सुझाव है कि उस डायरी को आराम से बैठकर ऐक बार पढ़ो और हो सके तो विनोद को भी पढ़ने को दो। उस के बाद उस डायरी को कूढ़े के डिब्बे में फैंक दो, क्योंकि जब तुम ने साथ नहीं रहने का निर्णय कर ही लिया है तो उस डायरी का भी अब कोई फायदा नहीं।

प्रिया जैसे– जैसे उस डायरी को पढ़ रही थी उस के जीवन की सुहावनी यादों ने उसे मन पर जो घृणा कर परत थी उस को पिघलाना शुरू कर दिया और उसकी आंखों से अश्रू धारा बहने लगी । जब उसने डायरी के अन्तिम पने को खत्म किया उसे लगा कि वह अपनी उंगली से नाखून को अलग कर रही थी। उसे अपने निर्णय पर बहुत प्श्चाताप और दुख हो रहा था। वह अपने को सम्भालती हुई विनोद के पास गई और डायरी देते हुये बोली,–––मेरा अनुग्रह है कि ऐक बार आप इस डायरी को पढ़ लो और फिर पढ़ कर यह आप का निर्णय है कि इसे कूढ़े के डिबबे में फैंकना है कि सम्भाल कर रखना है।

विनोद ने भी जब प्रिया की तरह ही डायरी को पढ़ा तो, वह सुहावनी यादें उसको याद दिला रही थी कि कैसे कुछ समय तक वे दो जिस्म पर एक प्राण थे। यह सोचकर पश्चाताप से उसका मन भर गया कि क्यों उसने छोटी –छोटी बातों को अपने जीवन की खुशियों को धवंस करने दिया। वह झट से प्रिया के पास गया और वह डायरी खोलते हुये बोला––प्रिया, आओ इन बचे हुये पन्नो को प्यारभरी घटनाओं से फिर से भर दें ताकी ममी से दूसरी डायरी के लिये कह सके।

इन्सान (Man)

इस धरती पर मनुष्य के रूप में जन्म लेने वाले को हम आदमी, इन्सान, मनुष्य या व्यक्ति कह कर सम्बोधन करते हैं। पर क्या सभी वास्तव में इन्सान है? इस का जबाव हमें श्री पथिक जी के सुन्दर भजन में मिलता है।

किसी के काम जो आये उसे इन्सान कहते है।
पराया दर्द अपनाये उसे इन्सान कहते है।।
कभी धनवान है कितना कभी इन्सान है निर्धन।
कभी सुख है, कभी दुख है, इसी का नाम है जीवन।
जो मुश्किल में न घबराये उसे इन्सान कहते है।।

यह दुनिया एक उलझन है, कहीं धोखा कहीं ठोकर।
कोई हंस – हंस के जीता है कोई जीता है रो रोकर।
जो गिर कर संभल जाये उसे इन्सान कहते है।।

अगर गलती रूलाती है तो यह राह भी दिखती है।
बशर गलती का पुतला है यह अक्सर हो ही जाती है।
जो गलती कर के पछताये उसे इन्सान कहते हैं।।

अकेले ही जो खा खाकर सदा गुजरान करते हैं।
यों भरने को तो दुनिया में पशु भी पेट भरते हैं।
जे बन्दा बांट कर खाये उसे इन्सान कहते है।।

क्यों रह गये हैं हम असभ्य

भौतिक उन्नती और सभ्यता होना दोनो अलग–अलग बातें हैं। उदाहरण के लिये अरब देशों में तेल के भरमार उत्पादन के कारण भौतिक उन्नती तो बहुत है, पर आम लोगो में सभ्यता की झलक नजर नहीं आती। कहीं भी थूक देते हैं। जिस देश के लोग भी सभ्य हैं वहां इस के लिये माहौल तैयार किया गया है नियम बनायें गयें हैं और जो कोई भी नियम तोड़ता है उसके विरूध लोग और प्रशासन खड़ा हो जाता है, फिर यह नहीं देखा जाता कि वह राजनेता है या फिर कोई प्रसिध व्यक्ति या उंचे पद पर तैनात अफसर।

अभी हाल में विश्व क्रिकट कप के दौरान आस्टरेलिया के एक जाने माने भूतपूर्व खिलाड़ी जिनका अपने समय में बहुत नाम था और वहां के दूरदर्शन पर आंखों देखा हाल बता रहे थे, खाना खाते हुये पलेट लेकर बेख्याली मे हाल से बाहर ले जाने लगे तो, वहां के कर्मचारी ने उन्हें वहीं रोक दिया और कहा कि खाने की पलेट आप बाहर नहीं ले जा सकते। वह अन्दर गये, खाना खाया और फिर कमैन्टेटर बाक्स में गये। क्या भारत में यह सम्भ्सव था ? बिल्कुल नहीं, यही कारण है कि हम सभ्यता के उस मुकाम पर नहीं पहुंचे जहां छोटे और आम देश भी है।

अभी भारत के प्रसिद्ध खिलाड़ी विराट कोहली, जो कि क्रिकट के साथ असभ्यता के नये मापदण्ड भी छू रहें हैं, एक भारतीय रिर्पोटर के साथ बहुत ही अभद्र व्यवहार किया। हमारे लोग उसको बुरा नहीं मान रहे, कह रहे हैं यह तो उनका स्वभाव है। हमें brash कोहली ही अच्छा लगता है। यही नहीं जो भारतीय क्रिकट संघ है वह पोचापाती करने में लगा है।

यही कारण है कि हम सभ्यता के उस मुकाम पर नहीं पहुंचे जहां छोटे और आम देश भी है।

Aryans were from Sapta Sindhu region

Dr. K K Dhaumia

Despite divergent views and opinions of the worldwide scholars about the contents of Rig Veda, it has been widely accepted as the most ancient book available in the libraries world around. To pinpoint the geographical origin of the Vedic Aryans, the author relies upon the various references in this most ancient book, Rig Veda. The analytical study of these references in the form of Sukta (hymn) and mantras (verses) encourages him to conclude that the Vedic Aryans had originated in ancient Sapta Sindhu region, comprising the area on which seven important rivers flowed. There are numerous references to these rivers, in Rig Veda.

While talking of seven rivers in Sapta Sindhu region, the most important are mighty Sindhu and Saraswati. River Sindhu rises in Tibet near the Man Sarover lake and moves to the north of the Kailash mountain; winding its way to the North west, it enters Kashmir region. From there it flows to the territory of present day Pakistan and becomes the part of Arbaian Sea near Karachi. In its long run of 1800 miles, it has its major tributaries like river Kabul and five rivers of erstwhile undivided Punjab. Then other most important river of Sapta Sandhu region was Saraswati which had its origin in the Sirmor hills of Shivalik range and then flowing through Kurukshetra, would eventually meet the western ocean near Prabha Gujarat State. This mighty ancient river is extinct since long and its traces can be found in the form of dry bed. One should not confuse the said river Saraswati with the mythical river Saraswati said to be flowing underneath along the confluence of Ganges and Yamuna at Prayag (Allahabad). Although the river Sindhu in the West and the river Saraswati in the east were the boundaries of the Vedic Aryan territory known as Sapta Sindhu, yet the river Kabul and certain other nearby rivers in the present day Afganistan, and the rivers Ganges and Yamuna in modern day Haridwar district of Utrakhand were within the reach and knowledge of Vedic Aryans. We find the mention of these rivers in Rig Veda time and again and it should encourage one to conclude that Vedic Aryans were from Sapat Sindhu region. In Rig Veda no other river finds any reference. If for a second it is believed that Aryans had migrated from any other place to this particular belt, they must have made a mention of their origin directly or indirectly. How could any race totally obliterate their past or place of origin, especially the Vedic Aryans who had so much respect for mother earth, its resources and environment. This is not all, their thought process and other rituals time and again refer to this particular region comprising of seven rivers.

Therefore, from the study of Rig Veda one can easily conclude that Vedic Aryans did not migrate from any other place as opined by many foreign and Indian scholars. The view point expressed by the founder of Arya samaj, Maharishi Dayanand Saraswati, who undisputedly is one of the greatest Vedic Scholars by virtue of his command over Sanskrit grammar, also corroborates this view point.

Dr Dhaumia is Ph.D. in Sanskrit from Punjab University. These are the excerpts from his book Hindu Culture: its origin and evolution

श्री कृष्णचन्द्र गर्ग की इस विषय पर टिप्पणी

डा. के.के. धौमिया का विचार है कि वैदिक आर्य लोग सप्तसिन्धु स्थान से सम्बन्ध रखते थे। वे आधार ऋग्वेद में आए सप्तसिन्धु, सरस्वती आदि शब्दों को मानते हैं। वे मानकर चल रहे हैं कि वेद मनुष्यों ने बनाए हैं। इसी कारण से वे कह रहे हैं कि वैदिक आर्यों ने ऋग्वेद में सप्तसिन्धु शब्द का प्रयोग किया है।

महर्षि दयानन्द वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं। इसलिए वे वेदों में इतिहास नहीं मानते। सिन्धु, सरस्वती आदि नदियों के नाम वेद से शब्द लेकर ही रखे गए हैं। वेद पहले हैं और नदियों के नाम बाद में रखे गए हैं। इसलिए ऋग्वेद में आए सप्तसिन्धु शब्द से किसी स्थान विशेष की कल्पना निराधार है।

महर्षि दयानन्द मानते हैं कि पृथ्वी पर मनुष्य की सर्वप्रथम उत्पत्ति त्रिष्टुप (तिब्बत) में हुई थी। उनमें आर्य और दस्यु दोनों प्रकार के लोग थे, केवल आर्य नहीं। बाद में आर्य लोग जहां पर जाकर बसे उस स्थान का नाम आर्यावर्त्त पड़ा।

इस प्रकार डा. धौमिया का लेख महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की मान्यताओं से मेल नहीं खाता। 0172-4010679

हमारे अच्छे गुण और अच्छे कामों की खुश्बू अवश्य फैलती है

यह छोटी सी कहानी बताती है कि हमारे अच्छे गुण और अच्छे कामों की खुश्बू कैसे जिन्हें हम जानते भी नहीं उन्हें भी हमारे बारे में अच्छा सोचने पर मजबूर करती है, और वे हमारी और खिंचे चले आते है।

मदन एक बर्फ की फैकटरी में सुपरवाइजर का काम करता है। एक दिन मजदूरों का वेतन बनाते हुये उसे अपने निर्धारित समय के बाद रूकना पड़ा। कुछ समय बाद वह क्या देखता है कि लाईट गुल हो गई और सभी दरवाजे भी बन्द। उस समय मोवाईल नहीं होते थे और टैलीफोन की सुविधा भी बड़े आफिसर को ही होती थी। ऐसे में यह सोचकर कि बिना रोशनी और हवा के इतनी ठण्ड में वह कैसे अकेले में रात काट पायेगा, वह भयभीत हो रहा था। दो तीन घंटे बीत गये तो देखता है कि कोई व्यकित दरवाजे से टार्च लिये अन्दर आ रहा है। वह भाग कर वहां गया तो देखा सिक्योरटी गार्ड था। मानो जैसे उसे नया जीवन मिल गया हो। वह सिक्योरटी गार्ड के साथ बाहर आ गया और आते ही गार्ड को गले लगाते हुये उस ने पूछा–––थापा आपको कैसे यह पता लगा कि मैं अन्दर ही हूं? थापा हंस दिया और बोला––––साहब वैसे तो इस फैक्टरी में 200 आदमी हैं पर आप ही हैं जो मुझे आते हुये भी और जाते हुये भी मुस्कराकर अभिनन्दन करते हो । आज सुवह तो आप ने अभिन्नदन किया पर शाम को नहीं आये। मेरा मन साचने लगा कि यह कैसे हो सकता है कि आप अभिन्नदन किये बगैर चले जायें, जरूर कोई बात है। इसी लिये मैं टार्च लेकर आपको ढूंढने आ गया।

मदन हैरान था कि उसके माता पिता द्वारा डाली एक अच्छी आदत ने उसे कैसे गहन संकठ से बचा लिया। सचमुच हमारी अच्छी आदतो और गुणों की खश्बू जिन्हें हम जानते भी नहीं उन्हें भी हमारे बारे में अच्छा सोचने पर मजबूर करती है। आप ने कई बार देखा होगा कि कई बार हमारे माता पिता या परिवार के दूसरे सदस्य के अच्छे कामों के यश के कारण हमें भी लोग सम्मान के साथ देखते है।

इस लिये छोटे– छोटे अच्छे काम करते रहना चाहिये। और कुछ नही तो हम हंस कर दूसरे का हाल पूछ सकते हैं और हाल भी नहीं पूछ सकते तो कम से कम मुसकरा सकते हैं।

प्रकाश औषधालय

थोक व परचून विक्रेता हमदर्द, डाबर, वैद्यनाथ, गुरूकुल, कांगडी, कामधेनु जल व अन्य आर्युवैदिक व युनानी दवाईयाँ

Wholesaler & Retailer of :
HAMDARD, DABUR, BAIDHYANATH,
GURUKUL KANGRI, KAMDHENU JAL
& All kinds of Ayurvedic & Unani Medicines
Booth No. 65, Sec. 20-D, Chandigarh
Tel.: 0172-2708497

निष्काम भावना से किया कर्म क्या है?

भारतेन्दु सूद

अभी कुछ दिन पहले हमारे पड़ोस में एक विद्यार्थी ने 99 परसैन्टाइल ग्रेड प्राप्त किये और शहर में उसका पहला स्थान आया तो आस पास तेजी से जंगल की आग की तरह यह खबर फैल गई। उनके घर मे खुशी और उत्सव का माहोल था। वह विद्यार्थी अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और पड़ोसियों के साथ अपनी खुशी को बांट रहा थां । जब मैं शाम को उस विद्यार्थी को बधाई और शावासी देने पहुंचा तो उस की माता जी ने बताया कि वह तो उदास होकर बैठा है, कारण जो ग्रेड उसके आये है उन से उस के मन चाहे कालेज में दाखिला मुश्किल है। इस से एक बात सिद्ध होती है कि अगर हम इच्छाओं की पूर्ती में अपनी खुशी को ढूंढते हैं तो वह क्षणिक होगी और तभी तक रहेगी जब तक किसी दूसरी इच्छा की अपूर्ती हमें हताश नहीं कर देती।

निष्काम कर्म का उदाहरण – बाबा आमटे

यह सच्चाई है कि जब हम इच्छाओं की पूर्ती में अपनी खुशी को ढूंढते हैं तो उसी समय हम दुखी होने का भी एक बड़ा कारण स्वयं पैदा कर देते हैं क्योंकि हमारी ईच्छायें पूरी होंगी यह कोई निशचित नहीं। इस लिये ईच्छाओं की पूर्ती के लिये भाग दौड़ करते हुये हमें उस दुख और पीड़ा के लिये भी तैयार रहना होगा जो कि ईच्छाओं के न पूरा होने पर होगी, जैसा कि उस विद्यार्थी के साथ हुआ जिस के ने 99 परसैन्टाइल ग्रेड थे।

प्रश्न पैदा होता है कि हम अपनी क्षणिक खुशी को चिरस्थाई खुशी में कैसे बदल सकते है। चिरस्थाई खुशी का अर्थ है ऐसी स्थिती जब असफलता हमें हताश न करे और सफलता खुशी का उन्माद न भर दे। **उपनिषद का त्रिषी** कहता है कि कर्म के फल से आसक्त हुये बिना कर्म को करना ही इसका एक उपाय है।

यहां यह समझना आवश्यक है कि कर्म के फल की इच्छा करना और कर्म के फल के साथ आसक्त होना दो अलग–अलग बातें है। उदाहरण के लिये उस विद्यार्थी ने मेहनत करते हुये अच्छे नम्बरों की ईच्छा की उस में कुछ भी गलत नहीं। यह कर्म के फल की ईच्छा करना बिल्कुल उचित है। पर अगर मेहनत का फल ईच्छा के अनुसार नहीं मिला, तो उस को लेकर हताश हो जाना या फल को ही सब कुछ मान कर चलना, कर्म के फल के बारे में ही सोचते रहना फल के साथ आसक्त होना हैं। इसी तरह यदि हम फल मे आसक्त हो जातें हैं तो हम अपने गणत्वय पर पहुंचने के लिये गलत साधन भी अपना सकते हैं , जैसा की अक्सर होता है। यही है फल के साथ नहीं बन्धना।

यहां समझने वाली बात यह है कि कर्मफल का त्याग करने का तात्पर्य यह है कि हम कर्मफल की इच्छा तो करें पर उसके साथ आसक्त न हों।यह सत्य है कि कोई भी व्यकित कर्मफल के फल की ईच्छा का त्याग नहीं कर सकता। हर व्यकित परिणाम की इच्छा करता ही है। जो व्यक्ति कर्म के साथ आसक्त नहीं होता वह असफलता में यह मान कर हताश नहीं होगा कि अवश्य इस असफलता में उसकि लिये कुछ इस से भी अच्छा उस ईश्वर ने रखा हुआ जो उसे सफल होने पर मिलता। यही ईश्वर परिधान है। अर्थात यह मान कर चलना कि मेरा कर्तव्य कर्मकरना है, ईश्वर जो भी करेगा वह मेरे लिये अच्छा ही होगा। गीता में श्री कृ**ष्ण** ने जो निष्काम भावना से कर्म करने की बात कही है वह यही है। **श्री कृ**ष्ण ने नि**ष्काम कर्म का उपदेश देते हुये कहा––हे मनुष्य तुझे** कर्म करने का अधिकार है। पर जहां तक तेरे कर्म के फल की बात है वह तू ईश्वर पर छोड़ दे और अपने कर्म में निश्चिन्त लगा रह, यही तेरा धर्म है।

धर्म तो सत्य और सेवा का प्रतीक है

अशोक कुमार

धर्म बिना जीवन, समाज अधूरा है। जिस प्रकार जल मछली का जीवन है, धर्म का भी वही काम है। धर्म संगठन, एकता भलाई का सूत्र धार है। भारत वर्ष भी धर्म प्रधान देश है। पर जब धर्म की बात आती है, तो हिंदू और मुस्लिम धर्म की ही बात समझी जाती हैं। साधरण भाषा में धर्म से अभिप्राय है पूजा, उपासना, स्थापना, मूर्तियों, ग्रथों और कर्म काण्ड लिप्त प्रभु आराधना, नाम जपना आदि कभी कभी विरोध, टिप्पणी, अलोचना, अप्रसंशा भी धर्म की परिधी में आते है। कुल मिलाकर भारत में धर्मों की है भरमार, देवता है बेशुमार, हर एक का अपना धर्म है। हर एक की अपनी परिभाषा है, कोई धर्म को जोड़ना समझता है, कोई बैकार सिद्धातों को तोड़ना, कोई चुप रहना, कोई धर्म को सर्वाथ, कोई अनर्थ, किसी का धर्म आतंक, किसी का समाज सेवा, किसी का प्राकृतिक सुरक्षा, कुछ धर्म को रिश्ते बनाना, कुछ का फरीसतों में, कुछ का धर्म बन्धन है, कुछ एक का धर्म जंजीरे, कुछ का धर्म केवल जगीरों में हैं। कोई कहे सोने की लंका, कोई कहे दीन दुखियों की रक्षा। अगर धर्म होगा गजनि या होगा, औंरगी तो फिर आयेगा फरंगी, अगर धर्म है अस्पष्ट फिर तो समाज होगा नष्ट। बुद्धिमानों के अनुसार धर्म, बिना आदेश हृदय में करे प्रवेश, जिससे स्वय को समझे नरेश, धर्म ना हो हरिनाशक, ना हो, दर्योधन और दुशासन, बस धर्म रहे सदा यशु, कबीर, रविदासा, न हो कोई अपमानित, सबको करे समानित। धर्म की नवीन परिभाषाएं कर रही है निराशएं, धर्म आन्तरिकता में है या इसको समझो मस्तिष्क नियंत्ररन। धर्म की इतनी चर्चा चिंतन हो रहा है, कोई धर्म को सिकोड़ता है, मरोड़ता है, निचोड़ता है, या बटोरता है। धर्म की ना बनाओ कोई सीमा- भाषा, धर्म से हर एक को होती आशा।

लाला लाजपत राय

सत्य और सेवा का जीवन

आज भारतवर्ष में धर्म एक बहुचर्चित विषय है, आज के सर्दभ में यह विषय अति संमवेदना- शील है। इतिहासिक तथ्य भी है कि धर्म के नाम पर दंगे- फसाद होते है। पर धर्म एक ऐसी प्रणाली है, एक ऐसा उपकरण भी है जिससे सत्य-शांति स्थापना, प्रगति, उन्नति, भी होती है। धर्म के ठेकेदार अपने ढंग से परिभाषित करते है। धर्म पर राजनीति भी होती है। धर्म पर सीमाये निरधारित होती है। धर्म के नाम पर कोई दल, संघ, सेना बनाता है। धर्म का विषय धीरे-धीरे गोबर के उपलों के समान जलता रहता है। कोई घर वापसी की कोई, धर्म परिवर्तन कोई, लव- ज़िहाद की कोई, अधिक बच्चे पैदा करने की, कोई धर्म के नाम पर उच्च नीच का जिक्र करता है, कोई परिक्षा ले रहा है, कोई शिक्षा दे रहा है, कोई धर्म को स्वदेशी कह रहा है कोई इसे विदेशी। अगर धर्म में कोई दोष लगे तो इसके लिए जोश नही होश और संतोष चाहिए। सत्य है कि कोई धर्म त्रुटि युक्त नही होता न ही धर्म में प्रतिवद्धता होती है, त्रुटिया तो मनुष्य में, सोच में होती है, जो संचालन-रचना करता है। वही धर्म सही जो चांद की तरह रोशनी, गंगा यमुना तहजीब, बर्फ जैसी ठंडक औेर वृक्ष जैसी छाया दे। सार्थक काम करना भी एक बड़ा धर्म है, सकारत्मक सोच, उदारता भी धर्म है। आज जिस धर्म की चर्चा हो रही है उसे धर्म कैसे कहे? वास्विक धर्म में न जबर होता है न छल, अगर मानव धर्म का आचरण करें तो वह धर्म समाधान यंत्र और रक्षा कवच बन जाता है इस प्रकार धर्म न थोपा जा सकता है न वाध्य किया जा सकता है

विवेकानंद जी का कहना है कि धर्म कोई अफीम की गोली नही अपितु यह अमृत से परिपूर्ण कलश है, धर्म कभी तोडने व विभेद की बात नही करता अपितु यह संसार को जोडने की बात करता है। भारतीय मनीषियों ने धर्म को कस्तुरी के समान जीवन को सुगधित करने वाला कहा है। समाज को धारण करना ही धर्म है। धर्म समाज को एक सुव्यवस्था की कड़ी में पिरोकर रखता है यहा विच्छेद की बात होती वहा अधर्म होता है । भारतीय सहित्य में उपासना- पद्धति को ही धर्म की संज्ञा नही दी गई खुद पर भरोसा रखो, अडिंग रहो और मजबूत बनो ऐसा धर्म चाहिए। अगर अपने आप पर भरोसा नही तो मुक्ति नही मिलेगी। संत तिरूवल्लर अनुसार, जो धर्म विष फैलाये वह धर्म नही मनीसी मनु का धर्म से अभिप्रार्य है धैर्य, क्षमा, संयम, चोरी न करना, स्वच्छता, इन्द्रियों को वश में रखना, बुद्धि, विद्या, सत्य, क्रोध न करना आदि। याज्ञवकय ने कहा अहिंसा, दान, इन्द्रिय निग्रह, धर्म है। इस प्रकार सहित्य संस्कृति, विशलेषण- खोज से स्पष्ट होता के धर्म सेवा, सत्य, संतोष, दया, दान, अक्रोध, नैतिकता, विकास, प्रगति का सोचना, लोभ, घंमड, सर्वाथ को छोडना, मनुष्य का विकास विचार, पश्चाताप, चिन्त, त्याग, प्रभु भजन- स्तुति ही धर्म है।

इस प्रकार धर्म नितियों और नियमों का पुंज है जिस में अलोचना ओर उलंघना भी शामिल है। धर्म का मुख्य काम है ज्ञान-निर्माण, प्रसार, और सुधार । जिससे कर्म प्रभावी होता है। धर्म का मुख्य काम कर्म शुद्धी करण और सोच परिवर्तन। हर धर्म में सत्य पर बल दिया गया है। इस लिए मनुष्य ऐसा कर्म करे जो सत्य पर आधारित हो, वो पृथ्वी प्रभु का दूत है और उससे प्रेम भलाई की अपेक्षा है। कोई धर्म न छोटा है न उच्च है सब धर्म समान है, तो फिर किसी धर्म की अलोचना क्यों ? अपमान क्यों ? मूर्तियों को तोडना क्यों ? धर्म कर रहित होता है, कर्म की गुणवता धर्म से जुड़ी होती हैं, कर्म से धर्म परख हो जाती हैं, किसी के चित्र को अग्नि सम्रपित करना, या देश छोड़ने पर विवृश करना धर्म लक्षण नही है, हर धर्म में संरक्षण का स्थान होता है। प्रधान मंत्री मोदी अनुसार किसी भी व्यक्ति के साथ धर्म के कारण भेदभाव करना धर्म नही है। किसी को भी अपने हाथ में कानून लेने का अधिकार नही हैं, देश सविधान की परिधी में हैं, सविधान सर्वोतम है, सदियों से चिन्तन की उपज हैं, देश सविधान के दायरे में चलेगा, फिरकाप्रस्ती पर बेतुका बोलने वालो को सावधान करता हूँ और मेरी सरकार का एक ही धर्म है, भारत सर्व प्रथम है, एक ही धर्म ग्रंथ हैं और वह है भारतीय सविधान, एक ही भक्ति है और वह भारत भक्ति एक ही सेवा है देश सेवा और भलाई, आपस में न करे कोई लडाई, गरीबी से ही हो लडाई, समप्रादायिकता और राजनिति करे देश की तबाई, दिलों को न तोडने की हो कोशिश। भारत अनेक धर्मो का देश है जो भारत में बढ़ फूल रहे है, इसलिए धर्म से अर्थ है कि सबका साथ, सबका विकास और सबके सहयोग की अपेक्षा हैं। इस कथन से धर्म का अर्थ है सहनशीलता, सवीकारता और कर्तव्य प्रयाणता संसार विरोधी न हो, धर्म तो यह सिखाता है के सभी अपना कर्म करे । सबको समझो, सबको समझाओ, जीओ और जीने दो, कोई कर्म बिना ज्ञान धर्म नही होता, धर्म स्थिर और स्थाई नही होता, समय और परिस्थितयों से प्रभावित होता हैं अतः गतिशील होता है। डेरे जमाकर, देवालय बनाकर आस्तिकता नही आती । धर्म आधारित राज्य शुभ चितंक होने का पैगाम नही देता। आचारण, व्यावहार, में सरलता और मधुरता धर्म हैं, किसी के दुख रूपी काटों को चुगना, अनाथों, अन्धों को सहारा देना धर्म कहलाता है। आप के समाने कोई तड़प रहा है, उस पर दया और दवा देना धर्म हैं। अगर इतिहास पर नज़र डाले तो महान पुरूषों ने समाज में करीतीयों के प्रति अवाज़ उठाई वह भी एक धर्म उदारण था। इस प्रकार धर्म सुरक्षा करे, विभाजन नही न ही प्रकृतिक से छेड़छाड़ और न ही समाज में तोड़- फोड़ धर्म हैं। चाणक्य का भी मानना हैं के धर्म से अर्थ मानव कल्याण, धर्म पर चलाना ही मानव कर्तव्य है और धर्म से ही सत्य की रक्षा होती है। भगिनि निवेदता की पुस्तक पथ और पाथेय में उसने लिखा है कि जीवन के सनातन नियम ही धर्म है डॉ प्रणव पंडया, अनुसार संस्कृति रक्षा ही युग धर्म है। देवनाथ तिवारी धर्मज्ञ अनुसार समाज सेवा सबसे उपर,धर्म है इस प्रकार धर्म एक ऐसा लवण जो व्यवहार को नरम करे, जख्मों पे मरहम बने, न ही कभी तेजाब बने, धर्म न अदेश करे, न ही कोई भेश-भसम हो, बस एक ही रंग हो, एक ही रूप हो, एक ही प्रसंग हो, इनसानियत का जनून हो। आज बड़े स्तर पर धर्म का शुद्धीकरण, नवीनीकरण, अद्योगिक करण हो रहा। आज धर्म के विकास के लिए शोद्धसंस्थान, प्रयोगशालाये, चर्चा स्थल बन गए हैं। अब तो, दूर देश दे संदेश, टुटने से अब बचो, धर्म का न मुद्धा फड़ो, देश टुट जाएगा, होते अगर आज, स्वतंत्रता सग्रामी, वह भी तडपते दशरथ की भाती, धर्म से न बनाओ सरहदे न करो कोई विभाजन, करनी है अगर हिफाज़त देश और समाज, की प्रेम का बनाओ धर्म और फलाओ ऐसा धर्म। धर्म रहे बन्धनों से मुक्त, मगन करे, तपश को करे कम, न जलन हो, न गबन हो, न हो दूषकर्म, भयरहित समाज हो, आपस में प्रेम हो, न ही अक्रोश हो,। अशोका-अकबरि धर्म को सब करे समरण ऐसा ही चाहिए धर्म।

आसक्ति, भक्ति और वाचक भक्ति

काम क्या है ?	भोगों में आसक्ति
कोध क्या है ?	स्वभाव में आसक्ति
लोभ क्या है ?	धन में आसक्ति
मोह क्या है ?	स्वजनों में आसक्ति
अंहकार क्या है ?	अंह में आसक्ति
भ्रष्टाचार क्या है ?	स्वार्थ में आसक्ति

इस प्रकार आसक्ति व्यक्ति को सब पापों की और ले जाती है। इस से छूटने का उपाय है प्रभु भक्ति । परन्तु वही भक्ति जिस में ईश्वरीय गुणों को धारण किया जाये न कि वाचक भक्ति जिस में केवल जाप ही करते रहे।

श्री धर्म पाल कपूर कि पुस्तक से

महर्षि दयानंद सरस्वती भाषा प्रेम या विरोद्ध से स्वतन्त्र थे।

यहां मैं महर्षि दयानंद सरस्वती के उस पत्र को जो उन्होने सेठ निर्भयराम को 23 मई 1881 में लिखा था, कि कुछ पक्तियां प्रस्तुत कर रहा हूं।

''मैं चाहता हूं कि आपकी संस्कृत पाठशाला में 3 घंटे संस्कृत, दो घंटे अंग्रेजी और एक घंण्टा उर्दु फारसी पढ़ाई जाये। ''

यह पत्र आर्य सन्देश के 16 फरवरी 2015 के अंक में प्रकाशित हुआ है। मेरे पास इसकी प्रतिलिपी है। वर्तमान में दिल्ली सभा के विक्रय भाग में रामलाल कपूर टस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तकों में उनके पत्र है।

हस्ताक्षर दयानन्द सरस्वती

इस पत्र से कुछ बातें उभर कर आती है।

1. महर्षि दयानंद सरस्वती अग्रेजी के बहुत पक्षधर थे । यही नहीं 1880 के बाद वह स्वयं अंग्रजी सीख रहे थे। स्वामी जी बहुत उन्नतीशील विचारों के थे। यही कारण है जो शुरू के सालों में जो उनके अनुयाई बने वह शिक्षित वर्ग था और उंचे पदों पर थे।

2 महर्षि दयानंद सरस्वती किसी भी तरह के भाषा प्रेम या विरोद्ध से स्वतन्त्र थे। जैसे उनके जीवन से ही पता लगता है, उन्होने जब देखा कि भारत की जनता संस्कृत को समझने में असमर्थ है तो संस्कृत के महान पण्डित होने के बावजूद उन्होने संस्कृत के स्थान पर हिन्दी को अपनी प्रचार का साधन चुना। जब उन्होने देखा कि यदि विश्व के लोगों तक पहुंचना है तो अंग्रजी का ज्ञान आवश्यक है तो उन्होने अग्रेंजी सीखनी प्रारम्भ की। यही नहीं अगर आप उपर कें पत्र को देंखेगे उन्होने उर्दू और फारसी पढ़ाने की भी सिफारिश की है, कारण उस समय भारत में आम लोगों की भाषा उर्दू और फारसी ही थी। हिन्दी तो बहुत बाद में आई। यह इस बात को बताता है कि भाषा प्रेम या विरोद्ध से स्वतन्त्र थे।

This culture of duality.

Today, every person seems to be living in a culture of duality. When it comes to their profession, everyone is well-equipped. If you speak to him about his professional subject, he will give you a detailed answer for every question. But, if you ask him about those issues which pertain to human life, that is, non-professional issues, then you will find that he is not mentally prepared to discuss this subject. In a way when it comes to knowing the science of life, most of us are ill-equipped. Thus to conclude that today, man's identity is more by his profession than his family life is absolutely true. If a man is well placed no one is bothered about his family life whether he is keeping his wife well or a woman is taking care of her in-laws.

It is not a question of balance; it is a question of priority. I am not saying that everyone should keep a balance between these two requirements. I am saying that everyone has to rightly set, or reset his priorities.

The problem is that when you try to reset your priorities, you fear that you are going to damage your commercial interests, because when your mind is engaged in intellectual issues, it will not be able to engage in money-related issues. You gain one thing, but at the same time you lose another. But, this is not a genuine excuse. You should not think in terms of money: you should think rather in terms of intellectual development. Intellectual development is so important that no excuse for neglecting it is acceptable. Adopt a simple formula: make intellectual development your first priority and then try to manage all other aspects of your life.

Lack of intellectual development is not a very simple matter. And it is the lack of intellectual development which has resulted in all those problems that are common in our present age, for example, tension, unnecessary disease, lack of peace of mind and losing that very thing that man so desperately wants – happiness.

जीवन–मृत्यु का चिंतन

डा. महेश विद्यालंकार

क्या लेकर हम जायेंगं। मुट्ठी बाँधे आए जगत् में, हाथ पसारे जायेंगे।। एक विचारक सन्त सदैव अपने झोले में एक खोपड़ी का कंकाल साथ रखते थे। जब कभी रजोगुण, सांसारिता, भोगवासना आदि मन में जागते, तो उस खोपड़ी को देख लेते थे। मन को समझाते थे–'' यह खोपड़ी अमुक बादशाह की है, जिसके पास आपार धनदौलत और सुख–साधन थे। आज उसका नामोनिशान तक नहीं हैं।''

मन मृत्यु के भय से सँभलता है। धर्मग्रन्थ तथा महा पुरूष कहते हैं कि हम पापकर्मों, अधर्म, बुराइयों आदि से तभी छूट व दूर हो सकते हैं कि जब हम यह मानकर चलें कि जीवन हमें केवल एक दिन के लिये मिला है। तब इन्सान समय की कीमत समझकर उसके सदुपयोग करता है। जाने वाला आदमी लड़ाई–झगड़ों तथा लम्बे–चौड़े माया – मोह में नहीं पड़ता है। मृत्यु को नित्य मन में रखने से मनुष्य बुरे कर्मों से बचा रहेगा। जो यह मानकर अपना जीवन व्यतीत करता है कि हमें दुनिया से एक दिन जाना है, वह व्यर्थ के विवादों, उलझनों,झगड़ों और भोगों में लिप्त नहीं होता है। ऐसे व्यक्तियों की दृष्टि सदा अपने जीवनलक्ष्य की ओर रहती है। दुनिया में जैसे अन्य कामों को करने की तैयारी करते हैं वैसे ही मृत्यु की भी तैयारी करनी चाहिये। मृत्यु के लिये सदा तैयार रहना चाहिये। यहाँ हर घड़ी विदाई की है। इस दुनिया में अधिकांश लोग बिना तैयारी और बिना अपने का संभाले व समेटे अचानक जगत् से विदा हो जाते हैं। मृत्यु परमात्मा के हिसाब का दिन है। प्रभु को स्मरण रखने से पाप नहीं होता है।

श्मशान पर पापभाव छूट जाता है। वहाँ परमात्मा का स्मरण आता है। श्मशान वह स्थान है, जहाँ एक दिन सभी को जाना पड़ता है। यह मनुष्य शरीर का अन्तिम मुकाम है। मृत्यु की मुनादी, घण्टा, सूचना 'रामनाम सत्य है' आदि हम नहीं सुन पा रहे हैं। वृद्ध और रागी शरीर व श्मशान की ओर जाती अरथी आदि से हम कुछ नहीं सीख पा रहे हैं। जब अरथी श्मशान की ओर जा रही होती है, तब अरथी आगे–आगे होती हैं और लोग पीछे–पीछे जा रहे होते हैं। तब अरथी कह रही होती है कि मेरे पीछे चले आओ। सभी को एक दिन श्मशान पर आना है। पचास साल पूरे होने पर समझना चाहिये कि आधा शरीर काल के मुख में जा चुका है। बाल सफेद होने लगें, दाँत गिरने लगें, पैर थकने लगें, तो समझना चाहिये कि मृत्यु नजदीक आने का नोटिस दे रही है।

हर वर्ष हम मकर–संक्रान्ति मनाते हैं। वह हमें सचेत करती है कि हमें इस दुनिया से उत्तरायण में प्रयाण करना है। उत्तरायण वह स्थिति है, जिसमें दिन बड़ा और रात छोटी होती हैं अर्थात् उत्तरायण में प्रकाश अधिक और अन्धकार की मात्रा कम होती है। ऐसी ही जब हम पचास की आयु पर पहुँच जायें, तब हमारे जीवन में उत्तरायण अर्थात् प्रभु के प्रेम का प्रकाश घटित होना चाहिये। यही प्रकाश का मार्ग है, जिसकी प्रतीक्षा ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने वाले भीष्म जैसे लोग करते हैं। मकर–संक्रान्ति हर वर्ष हमें यह संदेश देती है कि ''अन्धकार से प्रकाश की ओर चलो। जीव रूपी अमावस्या को पूर्णमासी में बदलो। जो अब तक उल्टा–सीधा करते आए हो, अब उसे करना बन्द कर दो। श्रेष्ठ कर्मों की ओर बढ़ो।

जिसका जीवन सँभल व सुधर गया, उसे मृत्यु डराती, धमकाती व परेशान नहीं करती है। कथा, प्रवचन, क्रिया, श्मशान आदि से हमें मृत्यु को बार–बार याद कराया जाता है, जिससे व्यक्ति मृत्यु को कभी न भूले। प्रायः लोग मृत्यु को भूल जाते हैं। दुनियावी चक्करों, इच्छाओं, भोगों तथा चीजों में इन्सान इतना बेसुध हो जाता है कि उसे पता ही नहीं चलता कि दुर्लभ जीवन कब खत्म हो गया और कब दबे पाँव मरण आ गया।

जब सिकन्दर को मालुम हो गया कि उसका अन्तिम समय आ गया है तो उसने अपने धर्म गुरू से कहा कि जब उसका जनाजा ले जाया जाये तो उसकी बाजुंए कफन से बाहर निकलवा देना, जिससे दुनिया वाले देखें व सबक ले सकें कि सिकन्दर ने मारकाट, लूटपाट करके इतनी सम्पदा जोड़ी थी, जाते समय एक कोड़ी भी साथ न ले जा सका। सारा जीवन जोड़ने में लगा दिया, अन्त समय में वह खाली हाथ गया। ऐसी बातें और घटनाएँ हमें प्रेरित व शिक्षित करती हैं कि पाप, अन्याय, अधर्म व गलत तरीके से कमाया धन–माल कुछ भी साथ न जायेगा। दृष्टान्तों से हमें जीवन–दृष्टि मिलती है। ऐसे सोच–विचार तथा बातों से जीवन सँभला रहता है।

शूगर रोगी के इलाज में सहनशीलता एक आन्तरिक यात्रा

डा0 कुमुद गिरी

जो देखना जानता है वह आत्मा की गहराई में भी जा सकता है जो खुद को पकडे रहता है वह ध्यान की स्थिति में नहीं जा सकता । ऊपर तो अकाश ही अकाश है थोड़ा गहराई में जाओ वहां प्रकाश ही प्रकाश है । रोग का भय इन्सान को कमजोर बनाता है और कमजोर इन्सान को कोई सहारा नहीं देता जब हम शररिक शक्तियों का उपयोग करना बंद कर देते है तो वह खत्म हो जाती है हमारी सहनशीलता का न होना जिसका प्रभाव शरीर पर पड़ता है अर्थात शररिक व मानसिक कमजोरी को दबकर सहन करना सहनशीलता नहीं बल्कि अपने आत्म विश्वास को मजबूत बनाना है अब शूगर रोग को ले लिजिए छोटा सा रोग है । आज समाज में इसका ज्ञान न होते हुए भंयकर रोग बना दिया है शूगर रोगी में सोच यह रहती है मैं ये नहीं खा सकता मैं वो नहीं खा सकता, न ये कर सकता हूं न वो कर सकता हूं, पिछला टेस्ट इतना था अब कितना होगा और शूगर को बार-बार टेस्ट कराना, पड़ोस में शूगर के कारश मौत हो गई, हाय शूगर -हाय शूगर ये बन्दीशे ये तनाव व बातें घेरे रखती है । मेरे अनुसार सैकडों शूगर रोगियों से मिला शूगर बिमारी का ड़र खत्म कर सकता है खान-पान की बन्दीशे सब कुछ थोड़ा-थोड़ा खा सकते है । प्राकृतिक चिकित्सा व योग व्यायाम द्वारा शूगर को कंट्रोल किया और बहुत सार लोगों का इन्सुलिन बन्द हो गया और उनमें से ऐसे लोग मिले है और कहते है कि मेरे लिए शूगर का इलाज छोटा व आसान है जो इस रोग से भय खाता था मेरी सहनशीलता से भी बहुत छोटा है अब मेरी सहनशीलता में आन्तिरक यात्रा बहुत मजबूत बना दी अर्थात इन्सान का पिछला जन्म कैसा भी हो लेकिन शूगर का ज्ञान उसको महान बना देता है । शूगर रोगी के प्रसन्न होने से इन्सुलिन होता रहता है और जितना इसके रोग के भय को महसूस करोगे उतना सोचना पड़ेगा तो संकल्प भी लेना पड़ेगा इसलिए महसूस ही ज्यादा न करो । शहद को पानी में उबाल के पी सकते हो अगर साथ में हम देखे तो 50 प्रतिशत शूगर गैस या कब्ज के कारश भी रहती है इसके इलाज के लिए रात को सोते समय छोटी काली हरड़ का चुर्श का आधा चमम्च गुनगने पानी से एक दिन छोड़कर ले सकते है जो गैस कब्ज को दूर कर सकते है और शूगर भी नियंत्रश हो जाती है और आयु को भी लम्बा करती है ऐसे में मनोचिकित्त्सा बहुत आवश्यक है और इस रोग का पूरी चिकित्त्सा का इलाज मुझ से मिलकर ले सकता है अगले लेखन में तनाव भरी जिन्दगी में योग से शांति की खोज । **मोबाईल न0 09815727792**

महर्षि दयानंद के अछूत प्रथा के बारे में विचार

महर्षि दयानंद मनुष्य समानता के बहुत प्रवल समर्थक थे। इस बारे में वह सत्यार्थप्रकाश में लिखते है।

शूद्र ईश्वर की वैसे ही सर्वश्रेष्ठ कृति हैं जैसे कि दूसरे वर्गो के लोग। उनसे घृणा करना, अस्पृश्य समझना बहुत ही घृणित सोच है। हम कुतों को पालते हैं, बिल्लियों से खेलते हैं, भैंसों का दूध पीते है, उंटों की सवारी करते हैं और अपने जैसे मनुष्यों को ही अछूत समझें, इस से बड़ा पाप और अन्याय नहीं हो सकता। आगे वह शुद्रों के वेद पढ़ने के अधिकार के बारे में लिखते हैं–– जैसे परमात्मा ने पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, चन्द्र, सूर्य और वनस्पति सब के लिये बनाये हैं वैसे ही वेद भी सब के लिये है।''

ध्यान की महिमा

भगवान राम ने अपने गुरूवर वसि**ष्ठ** से पूछा––''गुरूवर ! शरीर को ठीक रखने के लिये तो प्रतिदिन हम अच्छे से अच्छा पोष्टक भोजन देते हैं, आत्मा को क्या खिलाये?

गुरूवर वसि**ष्ठ बो**ले––––'' हे राम आत्मा का भोजन ईश्वर का ध्यान है। जब तक मनु**ष्य** ध्यान नहीं करता आत्मा त्रप्त नहीं होती।''

मह**षि दयानन्द** सरस्वती भी बहुत सुवह पहले ध्यान ही करते थे जिसे ब्रहम यज्ञ का नाम दिया है।

क्यों आवश्यक है अध्यात्मवाद?

वेद में कहा है–– 'हे ईश्वर हमें ऐश्वर्य व वैभव मिले पर साथ ही कुटिलतापूर्ण कर्मो से भी दूर रहें क्योकिं ऐश्वर्य व वैभव के साथ कुटिलतापूर्ण कर्म विनाश की और ले जाते हैं। हमारी बार – बार यही प्रार्थना है कि हमे **श्रेष्ठ मार्ग पर ही चलाना। साथ में कहा है** हे प्रकाशस्वरूप प्रभु, सही ज्ञान और सही पथ प्रर्दशन के लिये हमें अच्छे परिपूर्ण विद्वानो व अच्छे आचरण वाले व्यक्तियों की संगति में ही रखें।

संगति व संस्कारो का जीवन में बहुत महत्व है। संगति के साधन है–– अच्छे व्यक्तियों का साथ , अच्छी शिक्षाप्रद पुस्तकों का अध्यन व ज्ञानवान गुरू । परन्तु अक्सर यह देखा गया है कि जब हम सफलता की सीढ़ीयां चढ़ रहे होते हैं तो अध्यात्मवाद की और हम पीठ मोड़ लेते हैं, जब कि अध्यात्मवाद ही अच्छी सोच व विचारों का स्रोत है। इसकी जगह भौतिकवाद की चमक दमक हमे घेर लेती है। एक के बाद एक भौतिक वस्तु के पीछे भागते हैं। नई महंगी से मह्हगीं कारें, आलीशान मकान एक नहीं अपितु अनेक, जहां हम कभी गये भी नहीं होते, वहां भी प्लाट जमीन पर इन्वैस्टमैंट। **पर सन्तोष नहीं होता अपितु मृगतृष्णा की तरह असन्तोष बढ़ता ही जाता है।** हम अपने समय का मूल्यांकन भी इस तरह करना प्रारम्भ कर देते हैं कि जो समय तो हमने पैसे कमाने पर या अपने कैरियर को आगे बढ़ाने पर लगाया वह तो समय का सदुप्रयोग है और तो समय हमने दूसरी बातों जैसे कि किसी बिमार की सेवा, या सत्संग पूजा में लगाया वह दुर्पयोग लगता है, क्योकिं उन से कोई पैसे का लाभ मिलता नजर नहीं अता। परिवार के सदस्यों का स्थान ले लेतें है ऐसे मित्र जो की स्वार्थ से वशिभूत होते हैं उनकी बातें ही अच्छी लगती है।

धन आने पर अधिक से अधिक सुख के साधन जुटाना कोई बुरी बात नहीं बुरा तब है जब हमे विलासिता को जीवन में स्थान दे देते हैं।

इस विलासिता से हम बचे रहंगें अगर हम हमने अपने घर की एक खिड़की अध्यात्मवाद की तरफ खोल रखी हों। जब हम ऐसा करते हैं तों लगातार अच्छी संगती व अच्छे विचार मिलते रहते हैं जो कि हमें गल्त रास्ता अखतयार करने से बचा लेते हैं।

प्रश्न उठता है क्या है वे अध्यात्मवाद की बातें जो हमें लोभ, मोह, काम व अंहकार जैसी प्रवृतियों से बचा सकती हैं।

1 इस संसार की कोई भी वस्तु केवल हमारे लिये नहीं है वल्कि सब के लिये है। महात्मा गान्धी के श्शव्दों में, ज़रूरत से अधिक जो भी सम्पदा हमारे पास है, उसका भगवान ने हमें केवल रक्षक बनाया हैं न की मालिक।

2 किसी भी दुनिया की चीज पर प्रयोजन रहित कब्जा बनाकर रखने से अच्छा है उस का आवश्यकता पूर्ती के लिये प्रयोग हो।

भौतिकवाद से हम धन तो कमा सकते है पर धन का प्रयाोग सुख शान्ति के लिये कैसे हो यह हमें अध्यात्मवाद ही बताता है।

3 भौतिकवाद में खुशी ढूंडना मृगतृष्णा की तरह है।

4 हमारे अच्छे कर्म ही हमें खुशी प्रदान कर सकते हैं।

5 धन एक नौकर के रूप में तो ठीक है पर जब हम इसे मालिक का रूप दे देते हैं तो बात बिगड़ जाती है।

एक विचारक के अनुसार भौतिकवाद की तीन stages **हैं**

पहली stage––– जब धन हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करता है

दूसरी stage —— जब धन हमारी वर्तमान भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के साथ भ**विष्य** के लिये सुरक्षा प्रदान करता है।

तीसरी stage —— जब धन हमे विलासिता की और ले जाता है।

पहली दो में बुराई नहीं है। परन्तु तीसरी stage में हम कुटिलतापूर्ण कर्मो से तभी बच सकते हैं जब हम वेद भगवान की इस बात को याद रखेंगे

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किच्ञ जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा मा गृधः कस्य स्विद् धनम्।।

इस विश्व में जो कुछ भी जड़—चेतन, चराचर है व ईश्वर का ही है। मैं इसे अपना स्वामी नहीं समझूंगा। ऐसी भावना रखते हुये मैं आसक्ति को त्याग कर उस परमात्मा से सतत युक्त होते हुये धर्मपूर्वक, गिद्ध **दृष्टि** का त्याग कर धन को त्याग भाव से भोग करूगां। इस त्याग पूर्ण ढंग से भोग करने का अर्थ है कि जो भी धन मेरी जरूसत से अधिक है उसे ईश्वर का मान कर दुंखीं प्राणियों के कल्याण के लिये लगांउंगा। यही है अध्यात्मबाद।

जब मनुष्य त्याग व कल्याण के मार्ग को पकड़ लेता है तो अच्छे विचार खुद व खुद उसके मन में आने लगते हैं और वह बुराईयों से दूर रहता है । यही है अध्यात्मबाद को अपनाने का लाभ।

हमें प्रातः जल्दी क्यों उठना चाहिये ?

वैसे तो प्रातः जल्दी उठने के स्वास्थय की दृष्टि से बहुत से लाभ हैं परन्तु इसका एक अध्यात्मिक पहलू यह है कि जब हम सूर्य निकलने से पहले उठते हैं तो आहिस्ता आहिस्ता—सूर्य के प्रकाश द्वारा अन्धकार को मिटता हुआ देखते हैं, जो कि जीवन के लिये बहुत बड़ी शिक्षा है। जिस प्रकार सूर्य का प्रकाश रात्री के अन्धकार को आहिस्ता आहिस्ता मिटा देता है उसी प्रकार हमारे जीवन में यदि निराशा आती है तो सदैव यह विश्वास रखें कि यह निराशा सदैव रहने वाली नहीं, आहिस्ता आहिस्ता इसका स्थान आशा का प्रकाश ले लेता है। जिसने जीवन में आशावादी रहना सीख लिया वह कभी भी न हताश होगा और न ही जीवन उसको बोझ लगेगा।

आज अधिक लोग निराश इसलिये नजर आते है क्योंकि एक तो जो उनके पास भगवान का दिया हुआ है उस पर नजर नहीं घुमाते और न ही ईश्वर का धन्यवाद करते हैं दूसरा आशावादी रहना भूल गयें हैं।

प्रातः का नजारा यही शिक्षा देता है कि हम अन्धकार से हताश न हों। प्रकाश की किरणें अवश्य आयेंगी।

मशहूर लेखक साहिर लुधियानवी ने बहुत सुन्दर लिखा है

वो सुवहः कभी तो आयेगी, वो सुवहः कभी तो आयेगी
इन काली सदियों के सर से, जब रात का आंचल ढलकेगा,
जब दुख के बादल पिघलेंगे, जब सुख का सागर छलकेगा,
जब अंम्बर झूम के नाचेगा, जब धरती नगमें गायेगी।।
वो सुवहः कभी तो आयेगी, वो सुवहः कभी तो आयेगी
यही है आशावादी होना।

एन एस आई सी
NSIC
ISO 9001-2008
www.nsic.co.in

NSIC SCHEMES FOR THE DEVELOPMENT OF SMALL ENTERPRISES

- कच्चा माल खरीद के लिए वित्तिय सहायता
- बैंका के माध्यम से ऋण सहायता
- विपणन सम्बधी सूचना सेवाएं
- इनफोमीडियरी सेवाएं
- कच्चे माल का वितरण
- परियोजनाओं और उत्पादों का निर्यात
- सरकारी भण्डार खरीद कार्यक्रम के अन्तर्गत एकल बिन्दु पंजीकरण
- प्रदशनियां एवं व्यापार मेले

राष्ट्रीय लघु उद्योग निगम लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

एस.सी.ओ. 378, द्वितीय तल, सैक्टर 32 डी, चण्डीगढ़ – 160030
फोन : 0172–2620538, 2620539

रजि. नं. : 4262/12 ।। ओ३म् ।। फोन : 94170-44481, 95010-84671

महर्षि दयानन्द बाल आश्रम

मुख्य कार्यालय -1781, फेज़ 3बी-2, सैक्टर-60, मोहाली, चंडीगड़ - 160059
शाखा कार्यालय - 681, सैक्टर-4, नज़दीक गुरुद्वारा, मुंडीखरड़-मोहाली
आर्य समाज मंदिर, चंडीगढ़ व पंचकुला
E-mail : dayanandashram@yahoo.com, Website : www.dayanandbalashram.org

आश्रम के बच्चों की भौतिक, अध्यात्मिक और मानसिक उन्नती पर पूरा ध्यान दिया जाता है।

एक बच्चा जिसका नाम कृष्ण है, उसकी टांग में जन्म से ही विकलांगता थी, आश्रम के व्यवस्थापकों ने 13 मार्च को P.G.I. में उसका ओपरेशन करवाया। प्रभु की कृपा से दो महीने में वह दूसरों की तरह ही चलने लगेगा। इस ओपरेशन का खर्चा **श्रीमती ललिता गर्ग और उनके पति श्री राजेश गर्ग ने अपनी खुशी से दिया।** हम उनके बहुत धन्यवादी है।

धार्मिक माता/पिता 2100 प्रति माह
धार्मिक बहन/भाई 1500 प्रति माह
धार्मिक बन्धु 1000 प्रति माह
धार्मिक सखा 500 प्रति माह
धार्मिक सहयोगी 100 प्रति माह
धार्मिक साथी 50 प्रति माह

आप आर्थिक सहयोग देकर भी पुण्य के भागी बन सकते है् :-

A/c No. : 32434144307
Bank : SBI
IFSC Code : SBIN0001828

योगिंदर पाल कौड़ा, **नरेन्द्र गुप्ता** **लेखराम** (+91 7589219746)

स्वर्गीय
श्रीमती शारदा देवी
सूद

निमार्ण के 63 वर्ष

गैस ऐसीडिटी
शिमला का मशहूर
कामधेनु जल

स्वर्गीय
डॉ0 भूपेन्दर नाथ गुप्त
सूद

(एक अनोखी आर्युवैदिक दवाई
मुख्य स्थान जहां उपलब्ध है)

Chandigarh-2691964, 5076448, 2615360, 2700987, 2708497, Manimajra-2739682, Panchkula 2580109, 2579090, 2571016, Mohali-2273123, 2212409, 2232276, Zirakpur-295108, Shimla- 2655644, Delhi-23344469, 27325636, 47041705, 27381489,Yamunanagar-232063, Dehradoon-2712022, Bhopal-2550773, 9425302317, Jaipur-2318554, Raipur-9425507000, Lucknow-2683019, Ranchi-09431941764, Guwhati-09864785009, 2634006, Meerut- 8923638010, Bikaner-2521148, Batala-240903, Gwaliyar-2332483, Surat-2490151, Jammu-2542205m, Gajiabad-2834062, Noida-2527981, Nagpur-9422108322, Ludhiana-2741889, 9915312526, Amritsar-2558543, Jallandhar-2227877, Ambala Cantt-4002178, Panipat-4006838, Agra-0941239552, Patiala-2360925, Bhatinda-2255790

Medicine is available in other places also, Please contact us to know the name of the shop/dealer.

शारदा फारमासियुटिकलज मकान 231ए सैक्टर 45–ए चण्डीगढ़ 160047

0172-2662870, 92179 70381, E-mail : bhartsood@yahoo.co.in

जिन महानुभावो ने बाल आश्रम के लिए दान दिया

Sh. Kishori La Soni

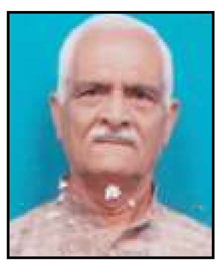

Sh. Goverdhan Soni

Sh. Satinder Kumar Puri

Pooja Verma

Charu Aggarwal

RNI NO. CHABIL/2012/47744 POSTAL REGN. NO. G/CHD/0154/2013-2015

मजबूती में बे–मिसाल

घर का निर्माण डीप्लास्ट के साथ

40 years in service

DIPLAST

PLASTICS LIMITED

AN ISO 9001 COMPANY

C-36, Industrial Phase 2, S.A.S. Nagar, Mohali (Pb.) India
Phone : +91-172-2272942, 5098187, Fax : +91-172-2225224
E-mail : diplastplastic@yahoo.com, Web : www.diplast.com

QUALITY IS OUR STRENGTH

विज्ञापन / Advertisement

यह पत्रिका शिक्षित वर्ग के पास जाती है आप उपयुक्त वर–वधु की तलाश, प्रियजनों को श्रद्धा सुमन, अपने व्यापार को आगे ले जाने के लिये शुभ–अशुभ सूचना विज्ञापन द्वारा दे सकते है।

Half Page Rs. 250/- Full Page Rs. 500/- 75 words Rs. 100

Contact : Bhartendu Sood 231, Sector 45-A, Chandigarh
9217970381 and 0172-2662870